तिरंगे के रंग में चमका मार्तंड सूर्य मंदिर

स्रोत: इकनॉमिक टाइम्स

स्वतंत्रता दिवस समारोह के उपलक्ष्य में जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग ज़िले में स्थित मार्तंड सूर्य मंदिर भारतीय ध्वज के तीन रंगों में प्रकाशित हुआ।

- इस सजावट ने स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों में **गर्व व खुशी** की भावना उत्पन्न की है, जिससे बड़ी संख्या में लोग इस ऐतिहासिक आयोजन की ओर आकर्षित हुए हैं।

मार्तंड सूर्य मंदिर के संदर्भ में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **निर्माण:** मार्तंड मंदिर का निर्माण लगभग 1200 वर्ष पूर्व **कारकोट राजवंश** के राजा ललितादित्य मुक्तापीड द्वारा किया गया था, जिन्होंने 725 ई. से 753 ई. तक कश्मीर पर शासन किया था।
  - यह मंदिर **सूर्य देवता** मार्तंड को समर्पित था और इसकी वास्तुकला में **मिस्र, यूनानी एवं** गांधार शैलियों का प्रभाव देखने को मिलता है।
  - मंदिर की **दीवारें बड़े-बड़े धूसर पत्थरों** से बनी थीं तथा इसके आँगन में नदी का जल भरा जाता था जो **कश्मीरी वास्तुकला** में इसकी भव्यता और महत्त्व का प्रतीक है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** मंदिर का इतिहास 12वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा लिखित **राजतरंगिणी** में वर्णित है।
- **वास्तुकला विशेषताएँ:** मंदिर में तीन अलग-अलग कक्ष थे अर्थात् **मंडप, गर्भगृह और अंतराला,** जो इसे कश्मीर के विविध मंदिरों में अद्वितीय बनाते हैं।
  - खंडहरों से पता चलता है कि मंदिर **84 स्तंभों के एक समूह** से घिरा हुआ था, जो कश्मीरी मंदिर वास्तुकला की एक विशेषता है।
  - उस समय असामान्य रूप से निर्माण में चूने के गारे का प्रयोग किया जाता था जो आप्रवासी **बीज़ान्टिन वास्तुकारों** की संलिप्तता का संकेत देता है।
- **सांस्कृतिक समावेशन:** मार्तंड मंदिर की वास्तुकला में शास्त्रीय **ग्रीको-रोमन, बौद्ध-गांधार और उत्तर भारतीय** शैलियों का संगम दिखता है, जो विभिन्न संस्कृतियों एवं साम्राज्यों के साथ कश्मीर के ऐतिहासिक संबंधों को दर्शाता है।
- **हर्ष के साथ संबंध: प्रथम लोहारा राजवंश के राजा हर्ष** (1089 ई. से 1101 ई.) ने खज़ाने के लिये मंदिरों को लूटा था, लेकिन उन्होंने **मार्तंड मंदिर को छोड़ दिया,** जबकि अन्य मंदिरों को उन्होंने धन के लिये विकृत कर दिया था।
- **विनाश:** ऐसा माना जाता है कि मंदिर को आंशिक रूप से **सुल्तान सिकंदर शाह मिरी** द्वारा ध्वस्त कर दिया गया था, वर्ष जिसने वर्ष 1389 से 1413 तक कश्मीर पर शासन किया था, हालाँकि कुछ इतिहासकार इस तथ्य पर विवाद जताते हैं।
  - वर्तमान मंदिर आंशिक रूप से संरक्षित है, इसकी प्रभावशाली धूसर दीवारें तथा इस पर नक्काशी द्वारा बनाई गई देवताओं की आकृतियाँ अभी भी दिखाई देते हैं।
- **वर्तमान स्थिति:** मंदिर के अवशेषों को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा 1990 के दशक के उग्रवाद के दौरान भी **"राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारक"** के रूप में संरक्षित किया गया था।

कश्मीरी मंदिर वास्तुकला

- **कश्मीरी मंदिर वास्तुकला** की अपनी अनूठी विशेषताएँ हैं जो स्थानीय भौगोलिक अवस्थिति के अनुरूप हैं तथा अपनी उत्कृष्ट पत्थर की नक्काशी के लिये प्रसिद्ध हैं।
- **महत्त्वपूर्ण व्यापार मार्गों पर स्थित होने के कारण इसकी स्थापत्य शैली कई विदेशी स्रोतों से प्रेरित है।**
- **कारकोट राजवंश और उत्पल राजवंश के शासकों के अधीन** मंदिर निर्माण **का कार्य अत्यधिक उत्कर्ष पर था।**
- कश्मीर वास्तुकला शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं:
  - तिपतिया/ट्रेफोइल मेहराब (गांधार प्रभाव)
  - सेलुलर लेआउट और संलग्न आँगन
  - सीधे किनारों वाली पिरामिडनुमा छत
  - स्तंभ वाली दीवारें (यूनानी प्रभाव)
  - त्रिकोणीय पेडिमेंट (यूनानी प्रभाव)
  - अपेक्षाकृत अधिक संख्या में सीढ़ियाँ।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

???????????:

प्रश्न: निम्नलिखित में से कौन-सा सूर्य मंदिर के लिये प्रसिद्ध है? (2017)

1. अरसावल्ली
2. अमरकंटक
3. ओंकारेश्वर

निम्नलिखित का उपयोग करके सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/martand-sun-temple-glows-in-tricolor